मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 4

MSK–003

स्नातकोत्तर कला उपाधि (संस्कृत) (एम.एस.के.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.एस.के.–003 : दर्शन : न्याय, वैशेषिक, वेदात, सांख य और मीमांसा

समय : 3 घण्टे अधिकतम अंक : 100

नोट : *सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रश्न-पत्र में तीन खण्ड हैं। प्रत्येक खण्ड में दिये गये निर्देशानुसार ही उत्तर दीजिए।*

खण्ड—क

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×10=30

(क) भारतीय दर्शन में अधिकारी स्वरूप का वर्णन कीजिए।

अथवा

भारतीय दर्शन में परमतत्त्व को देखने के उपाय को स्पष्ट कीजिए।

(ख) न्याय दर्शन में ईश्वर की सिद्धि का विवेचन कीजिए।

अथवा

योग दर्शन के प्रमुख सिद्धान्तों का निरूपण कीजिए।

(ग) जैन दर्शन के स्याद्वाद का विवेचन कीजिए।

अथवा

योगाचार-विज्ञानवाद सम्प्रदाय का आलोचनात्मक विवेचन कीजिए।

खण्ड—ख

2. निम्नलिखित की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए : $4 \times 10 = 40$

(क) नित्यद्रव्यवृत्तयो व्यावर्तकाः विशेषास्त्वनन्ता एव।

अथवा

कारणं त्रिविधम्-समवाय्यसमवायिनिमित्तभेदात्।

(ख) उत्क्षेपणावक्षेपणाकुञ्चनप्रसारणगमनानि पञ्च कर्माणि।

अथवा

तत्र प्रत्यक्षज्ञानकरणं प्रत्यक्षम्। इन्द्रियार्थसन्निकर्षजन्यं ज्ञानं प्रत्यक्षम्। तद्विविधम्–निर्विकल्पकं सविकल्पकञ्चेति।

(ग) विषयश्चाधिकारी च सम्बन्धश्च प्रयोजनम्।
अनुबन्धं विना ग्रन्थे मङ्गलं नैव शस्यते॥

अथवा

अपवादो नाम रज्जुविवर्तस्य सर्पस्य रज्जुमात्रत्ववद्वस्तु–विवर्तस्यावस्तुनोऽज्ञानादेः प्रपञ्चस्य वस्तुमात्रत्वम्।

(घ) दृष्टमनुमानमाप्तवचनं च सर्वप्रमाणासिद्धत्वात्।
त्रिविधं प्रमाणमिष्टं प्रमेयसिद्धिः प्रमाणाद्धि॥

अथवा

सत्त्वं लघुप्रकाशकमिष्टमुपष्टम्भकं चलं च रजः।
गुरु वरणकमेव तमः प्रदीपवच्चार्थतो वृत्तिः॥

खण्ड—ग

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** पर टिप्पणियाँ लिखिए :

$5 \times 6 = 30$

(क) पञ्चमहाभूत

(ख) पृथिवी

(ग) पुरुष बहुत्व

(घ) अज्ञान

(ङ) तितिक्षा

(च) शब्द

(छ) समवाय

× × × × ×